English

setuu अध्याय 25

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

जब असुर अयोध्या के महल में घुसे

चरण पूजा के नौवें सत्र के यजमान थे अशंक नामक एक मातंग युवक | उसकी आत्मा की पवित्रता के लिए हनुमान जी ने निम्न शब्द अपने श्री मुख से कहे :

हे मातंग मनुष्य गण , कल्पना करो कि संसार में हर तरफ अच्छाई है , धर्म है | हर आत्मा संतो द्वारा दिखाए मार्ग पर चल रही है | कही कोई अधर्म नहीं है , बुराई नहीं है | सब धर्म का पालन कर रहे हैं और ख़ुशी से रह रहे हैं |

अगर ऐसे संसार में बुराई को अपनी जड़ें फैलानी हैं तो कैसे फैलाएंगी? अगर कोई अधर्मी सिर उठाने की कोशिश करेगा तो आस पास के धर्म का पालन करने वाले लोग उसे तुरंत दबा देंगे | ऐसी स्थिति में बुराई अपने पंख फैलाये तो कैसे?

अच्छाई के वेश में |

यह असुरों का तरीका रहा है युगों से | रावण का ही उदाहरण लो | वह अपने लोगों के लिए भगवान् था | लंका के नागरिक उसे सबसे बुद्धिमान और विवेकी पुरुष के रूप में जानते थे | वह उनके प्रति दयालु था | वह अपनी सम्पति , अपना वैभव अपने सभी नागरिकों के साथ बांटता था |

जब कोई ऐसा व्यक्ति जिसे आप अपना आदर्श मानते हो , कोई बुरा कार्य करता है तो आपका दिमाग उसे उचित ठहराने का प्रयास करता है | कोई बुरा व्यक्ति अच्छाई का चोला पहनकर आपका आदर्श बन सकता है और फिर धीरे धीरे अपने असली मुद्दे पर आ सकता है | आप फिर उसके बुरे कामों को उचित ठहराते ठहराते खुद बुरे बन सकते हैं | आप अच्छे बुरे की पहचान खो सकते हैं| आपको पता भी नहीं चलेगा कि आप कब बुराई में फंस गए |

इसी तरह बुराई अपने पंख भले लोगो के बीच फैलाती है |

रावण के देह-दिमाग का नियंत्रण असुरों के पास था | लंका के लोगो को भी उसने अपने मोहपाश में बाँध रखा था | जब उसने माता सीता का अपहरण किया तब लंका के भले लोगों ने भी इस कृत्य को उचित ठहराने का प्रयास किया | उनका तर्क था कि अयोध्या के राजकुमार इसी योग्य थे | लंका वासी भ्रमित थे | वे अच्छे बुरे की पहचान खो बैठे थे |

लंका के लोगो को रावण के मोहपाश से निकालने के लिए राम जी ने रावण को शांति प्रस्ताव भेजे | प्रभु राम जानते थे कि रावण असुरों के वश में था इसलिए वह शांति प्रस्ताव स्वीकार नहीं करने वाला था | लेकिन इससे लंका के भले लोगो को ज्ञान हो गया कि कौन अच्छा हैं और कौन बुरा | इससे विभीषण जैसे लोगों की आँखे खुली जिन्होंने हमें भले लोगो को नुक्सान पहुंचाए बिना लंका पर विजय प्राप्त करने में सहायता प्रदान की और फिर हम लंका पर धर्म का शासन स्थापित कर पाए |

रावण से पहले तिमिध्वज नामक एक व्यक्ति था जिसने धरा पर अधर्म फैलाने की कोशिश की | और बहुत हद तक सफल भी रहा |

वह दंडक वन में एक वनवासी परिवार में पैदा हुआ | 16 साल की उम्र में उसने जंगल छोड़ दिया और हेहेया राज्य की राजधानी महिस्मती में आ गया | उसने हेहेया की सेना में भर्ती होने के लिए एक प्रतियोगिता में भाग लिया | अपनी धनुर्विद्या के अद्भुत प्रदर्शन से वह प्रतियोगिता में उतीर्ण भी हो गया |

तब उसके मन में पहली बार विद्रोह की चिंगारी जागी | उसने सेना में भर्ती होने से मना कर दिया | जब उससे कारण पुछा गया तो उसने जवाब दिया – 'मैं मात्र एक सिपाही बनकर किसी के आदेश मानने के लिए पैदा नहीं हुआ |'

सेना में भर्ती करने वाले पदाधिकारी उसकी इस टिपण्णी को एक 16 साल के किशोर की कोरी कल्पना समझकर हंस दिए | उन्हें नहीं पता था कि जिस लड़के पर वे हंस रहे थे वह एक दिन उनका दुस्वपन बनने वाला था |

तिमिध्व्ज कुछ दिन शहर में घूमा | महिस्मती की समृद्धि से जैसे जैसे उसका साक्षात्कार हुआ 'शासक वर्ग' के प्रति उसकी घृणा बढती गई और साथ ही बढ़ता गया उसका यह संकल्प कि वह एक दिन शासकों को उखाड़ फेंकेगा | घृणा भरे विचारों का एक तूफान उसके मन में उठ गया था |

एक दिन जब वह राजा के महल के बाहर बैठा था , एक संत ने उसके मन को पढ़ लिया |

'तो तुम सोचते हो कि तुम्हे हैहेया का राजा होना चाहिए?' संत ने मित्रपूर्वक मुस्कुराते हुए पूछा |

'नहीं| मैं सोचता हूँ कि सबको राजा होना चाहिए |' तिमिध्व्ज बोला |

'अन्य शब्दों में , किसी को भी राजा नहीं होना चाहिए,' संत बोले और उसके पास एक पत्थर की कुर्सी पर बैठ गए |

'हाँ , किसी भी राज्य की सम्पति पर सबका बराबर अधिकार होना चाहिए | जो महल हमारी आँखों के सामने चमक रहा है उसपर मेरा उतना ही अधिकार है जितना कि राजा का,' विद्रोही बालक बोला |

'तुम सतयुग में रहने की कल्पना कर रहे हो | संसार त्रेता युग में आ चुका है , बच्चे | मानवता के कल्याण के लिए वर्गीकरण आवश्यक है | यह निषाद-पृथु-ऋषि आदि वर्गीकरण देवो तथा उनके सहायक ऋषियों ने किया है ,' संत बोले |

'नामों में मेरी कोई रूचि नहीं है | मुझे अधिकार चाहिए | क्या राजा के पुत्र का इस महल पर केवल इसलिए अधिकार होना चाहिए कि वह भाग्य से राजा के परिवार में पैदा हो गया है?' बालक ने पुछा |

'तुम ये समझते हो कि हर चीज जो अस्तित्व में हैं उसको सभी में बराबर बाँट देना चाहिए , हैं न? फिर तो तुम्हारी देह पर भी सभी का स्वामित्व होना चाहिए | मुझे अपनी देह का स्वामित्व दे दो | तुम्हारी देह किसी औसत 16 साल के लड़के से अधिक निपुण है | तुम किस आधार पर— और तुम से मेरा अर्थ है तुम्हारी आत्मा से -- अपनी देह पर स्वामित्व जताते हो ? तुम्हारी देह जितनी तुम्हारी है उतनी मेरी भी होनी चाहिए,' संत बोले |

'यह कैसा तर्क है?' बालक भ्रमित स्वर में बोला , 'मेरी देह तो मेरी है | मेरी आत्मा के कुछ पूर्व के कर्म-इच्छाएं हैं जिनके आधार पर मुझे यह देह प्राप्त हुई है |'

'तुम्हारी यह बात केवल तुम्हारी देह पर नहीं अपितु पूरे संसार पर लागू होती है | तुम्हे जो कुछ मिला है अपने कर्म-इच्छा के आधार पर मिला है | राजा , राजकुमार , वनवासी – आदि सब मात्र किरदार है इस माया के नाटक में | तुम अर्थात एक आत्मा कोई भी किरदार चुन सकते हो | तुम्हे सिर्फ कर्म-इच्छा के पैकेटो को इधर उधर करना आना चाहिए | मेरी तरफ देखो , मैं एक ऋषि हूँ | मैं उन्ही जंगलों में रहता हूँ जहाँ तुमने कष्ट झेले हैं | लेकिन मैं कुछ भी पा सकता हूँ , कुछ भी बन सकता हूँ | मेरी इच्छा हो तो मैं राजा की देह में प्रवेश कर सकता हूँ , चाहूँ तो काल में पीछे जाकर सतयुग के दृश्य जी सकता हूँ | मैं तुम्हे तुम्हारी शक्तियां पहचानने में सहायता कर सकता हूँ | मेरे साथ मेरे आश्रम चलो | मैं तुम्हे सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करने योग्य मानता हूँ | मेरी शरण में आ जाओ | मुझको समर्पित हो जाओ |'

संत के इन शब्दों को सुनकर तिमिध्व्ज पागलों की तरह हंसने लगा और वहां से चला गया | हालाकि उसने एक भी शब्द नहीं बोला , संत ने उसके विचार पढ़ लिए और वो थे – 'ये तथाकथित ऋषि राजाओं के चाटुकार हैं | ये जान बुझकर समाज में असमानता बने रहने देना चाहते हैं क्योंकि ये लोग इससे लाभान्वित होते हैं |'

संत बालक की अज्ञानता पर मुस्कुरा दिए और इस घटना को भूल गए | उन्हें तो एक नया शिष्य उस दिन नहीं मिला लेकिन असुरों को उसमे एक लाभप्रद लक्ष्य मिल गया था | तिमिध्व्ज का घृणा से भरा मन असुरों के लिए उत्तम डेरा था जो हमेशा बुराई और नकारात्मकता की तलाश में रहते है |

तिमिध्व्ज कोई साधारण बालक नहीं था | उसमे संसार का रास्ता बदलने की क्षमता भी थी और अग्नि भी | उसमे संतो द्वारा बनाये रास्ते से मानवता को भटकाने की क्षमता थी | जो असुर उसके देह तथा मन को चालित कर रहा था वह भी कोई आम असुर नहीं था | सम्बरासुर, जो इस कल्प के सबसे शक्तिशाली असुरो में से एक है, ने तिमिध्व्ज के देह-मन-विवेक पर कर लिया था |

हर प्रमुख विश्व घटना में सम्बरासुर का हाथ रहा है | वह त्रेता युग में भी उतना ही शक्तिशाली था जितना कि द्वापर में | और कलियुग में भी वह शक्तिशाली और क्रियाशाली है | वह उन लोगों के मन भ्रष्ट करता है जो या तो सत्ता में हैं अथवा सत्ताशील लोगों को चुनौती दे सकते है | वह इस समय भी यही है | आपको उसके बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप न तो सत्ता में हैं और न ही आपकी तिमिध्व्ज जैसी महत्वाकांक्षा है | वह इस पूजा में अडचने नहीं डालेगा |

जैसा कि आप जानते हैं असुर जिस व्यक्ति पर कब्ज़ा करते हैं उसमे नकारात्मकता तथा बुराइयों को बढ़ाते रहते हैं | 16 साल के तिमिध्व्ज की घृणा ने जल्द ही एक हिंसात्मक आन्दोलन का रूप ले लिया | उसका सपना था कि एक ऐसा संसार बने जहाँ हर चीज पर सबका हक हो | उसने अपने सपनों के संसार का नाम रखा "वैजयंत"|

सबसे पहले तो उसने वनवासियो के दिलों में शोषित होने की भावना भरी | उसने "शासक वर्ग" के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया | जब तक वह 25 साल का हुआ , हर वनवासी के होंठों पर उसके विचार थे | वह अपने भड़काऊ भाषणों से घृणा फैलता था | अपने भाषणों में वह कहता था , 'इन तथाकथित राजाओं ने जंगलों को लूटा है | इन्होने पेड़ काटे हैं और पहाड़ों का खनन किया है अपने सुन्दर घर तथा वस्तुए बनाने के लिए | जिस पर वे अपना हक़ जता रहे हैं वह हमारी सम्पति है | अगर हमें अपना जीवन भी न्योछवर करना पड़े, हम अपना अधिकार लेकर रहेंगे | जो भी "वैजयंत" राज्य की स्थापना करने में आड़े आएगा हम उसकी हत्या कर देंगे |'

उसने स्वयं अपने परिवार की हत्या में भी संकोच नहीं किया जब उन्होंने उसके विचारों के विरुद्ध तर्क दिए | जो भी उसको समझाने की कोशिश करता वह उसकी निर्दयी हत्या कर देता था | सत्य , जो कि दंडक के आदिवासियों को बोलने की अनुमति नहीं थी , वह यह था कि उन्होंने कष्ट भरा जीवन अपने पूर्वजों के प्रति उनके प्रेम के कारण चुना था | वे जब चाहते , जंगल से पलायन करके गाँवों अथवा शहरों में बस सकते थे | उन पर कोई पाबंदी

नहीं थी | वे भी पहाड़ों का खनन और वृक्षों का उपयोग करके अपने लिए सुख सुविधा की चीजे बना सकते थे | वे सम्पति प्राप्त करके जो चाहे उस शहर में बस सकते थे | शहर के लोग उन्हें ख़ुशी से अपने समाज में सम्मिलित कर लेते |

तिमिध्व्ज के विचारों में कोई सच्चाई नहीं थी | फिर भी उसकी विचारधारा दूर दूर तक फ़ैल गई | करीब दो दशक के संघर्ष के बाद वह इतना शक्तिशाली हो गया कि इंद्र देव भी उसके कृत्यों से आतंकित हो गए |

जैसा कि मैं आपको पहले बता चूका हूँ , आपके आस पास जो भी चीजे हैं वे सब आकाश के द्रव का भाग हैं | इस द्रव का वितरण इंद्र देव द्वारा आत्माओं के कर्म-इच्छाओं के आधार पर होता है | तिमिध्वजा का विचार था हर चीज को हर किसी को बिना कर्मों का हिसाब लगाये वितरित करना| उसके कृत्य इंद्र देव को अपना काम अच्छे से करने में रोड़ा अटकाते थे |

तिमिध्वज की विचारधारा जंगल से बाहर दूर दूर तक फ़ैल गई | बहुत सारे गाँव ने उसका शासन स्वीकार कर लिया था और वह दिन भर दिन प्रसार करता जा रहा था | वह ग्रामों पर आक्रमण करता , अच्छे घरों को ध्वस्त करता , सोना लूटता और सबको इतना गरीब बना देता कि वे सब उस पर निर्भर हो जाते | फिर वह अन्न आदि का वितरण करके मसीहा बनता था |

हैरान करने वाली बात यह थी कि जिन लोगो का जीवन उसने नरक बना रखा था वे लोग ही उसके सबसे कट्टर समर्थक थे | क्या वह इसलिए था कि अगर वे उसका समर्थन नहीं करते तो वह उनको मार देता? क्या उनकी श्रद्धा का आधार भय था ?

पूर्णतः नहीं | कुछ लोग शहरो में , उसकी क्रूरता और भय से काफी दूर रहते थे तो भी वे उसके प्रति सहानुभूति जताते थे और उसका समर्थन करते थे | उनके पास तो उससे भय खाने का कोई कारण नहीं था | वे संपन्न लोग थे जो शहरों में आराम का जीवन जी रहे थे | वे अपने ही राजा, अपने ही राज्य जिससे उन्हें सब कुछ मिला था के विरुद्ध कार्य क्यों कर रहे थे ?

इंद्र देव इस समस्या का समाधान खोजने के लिए दशरथ के सामने प्रकट हुए | हालांकि दशरथ का राज्य इस समस्या से अभी तक अछूता था |

'हे इंद्र,' युवा राजा दशरथ बोले ,'मेरी सेना में विश्व के महानतम योद्धा हैं | मैं उनको इस समस्या का सफाया करने के लिए भेज देता हूँ अगर आप कहे तो |'

'नहीं दशरथ ,' इंद्र देव बोले , 'जिन जिन राज्यों में यह समस्या है वहाँ के योद्धा भी कुछ कम नहीं हैं | वे इसलिए असफल हो रहे हैं क्योंकि वे शत्रु को पहचान नहीं पा रहे हैं | तिमिध्व्ज के कुछ लडाको को ख़त्म करने के लिए पूरे के पूरे गाँव मौत के घाट नहीं उतारे जा सकते |'

'बताइये मैं किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ , इंद्र देव | हालांकि यह मेरे राज्य की समस्या नहीं है , मैं इसका सफाया करने में हर संभव सहायता करूँगा |'

'यह पूरे मानवता की समस्या है, दशरथ | अगर तिमिध्व्ज को नहीं रोका गया , उसका आन्दोलन तुम्हारे द्वार भी पहुँच जाएगा |' इंद्र बोले |

'नही इंद्र देव | मेरे राज्य, कोसल, में हर तरफ समृद्धि है | मैं अपने हर नागरिक की देखभाल करता हूँ | उनके पास ऐसे मूर्ख और हिंसक व्यक्ति तथा उसकी हिंसक विचारधारा का समर्थन करने का कोई कारण नहीं है |' दशरथ दृढ़ता से बोले |

'अगर मैं ये कहूँ कि तुम्हारे कुछ अधिकारी भी तिमिध्व्ज के प्रति सहानुभूति रखते हैं तो तुम क्या कहोगे? अगर उसके लडाके तुम्हारे दरवाजे पहुँच गए तो उसके प्रति सहानुभूति रखने वाले अन्दर से उसकी सहायता करेंगे,' इंद्र बोले |

'वह कौन से गुप्त ज्ञान का प्रयोग लोगो के मन-मस्तिष्क को भ्रष्ट करने में करता है? अगर उसकी हिंसा की प्रवृति को अगर एक तरफ भी कर दिया जाए तो भी मुझे उसकी विचारधारा मूर्खतापूर्ण लगती है | इतने सारे लोग उसका समर्थन क्यों कर रहे है ?' दशरथ ने पुछा |

'असुर, दशरथ , असुर ,' इंद्र देव ने उत्तर दिया | 'असुर संक्रामक रोग की तरह फैलते हैं | अगर कोई तुम्हारा अनादर करे , तुम्हे बेवजह गाली दे तो निश्चय ही वह व्यक्ति असुरों से संक्रमित है | और अगर तुम उसकी गालियों से दुखी हो जाते हो तो तुम अपने देह दिमाग में असुरों को आने का निमंत्रण देते हो | एक असुर तुम पर कब्ज़ा कर लेगा , तुम्हारे अन्दर उस व्यक्ति के विरुद्द घृणा भरेगा और फिर तुम बदला लेने की योजना बनानी शुरू कर दोगे | उस उत्तेजित अवस्था में तुम अपने परिवार अथवा मित्रो को अनचाहे ही दुःख पहुंचा सकते हो जिससे उन्हें भी असुर ग्रसित कर सकते हैं | इसी तरह तो असुरों का प्रकोप फैलता है |'

'अर्थात हमारी लड़ाई असुरों के विरुद्ध है , तिमिध्व्ज के विरुद्ध नहीं , है न?'

'हाँ दशरथ , सम्बरासुर मुख्य सरगना है यहाँ |' इंद्र देव ने उत्तर दिया | 'वह तिमिध्व्ज की देह में रहता है | हमें उसके निवास अर्थात तिमिध्व्ज की देह को नष्ट करना होगा | समस्या यह है कि वह जंगल में छिपकर रहता है | सेना उन मासूम ग्रामीणों की हत्या किये बिना उस तक नहीं पहुँच सकती जो जंगल के चारों ओर सुरक्षा घेरा बनाए हुए हैं | जंगल के अन्दर वह मासूम वनवासियों की सुरक्षा के बीच रहता है | उसका प्रभाव इतना अधिक है कि जिन जिन राज्यों ने अपने जासूस भेजे हैं उन सबने अपनी निष्ठा बदलकर उसका स्वामित्व स्वीकार कर लिया है | वे सब अब तिमिध्व्ज के लिए काम करते हैं | उसका मत परिवर्तन करने का तरीका इतना प्रभावी है कि अगर तुम अपने सबसे घनिष्ट सेवक को भी वैजयंत (तिमिध्वज द्वारा शासित गाँवों का समूह) भेजो , वह भी तुम्हारे विरूद्ध हो जायेगा | अतः मुझे लगता है कि तुम्हे वहां जाना चाहिए | तुम दशरथ हो | तुम्हारा दस घोड़ों वाले अपने मन पर पूरा नियंत्रण है | असुर तुम्हारे मन में प्रवेश नहीं कर पायेंगे | सम्बरासुरा की तकनीकें तुम पर असर नहीं करेंगी |'

'आपका मतलब है कि मैं जासूस की तरह जाऊं?' दशरथ ने पूछा |

'नहीं , तुम्हे अपनी पहचान छुपाने की आवश्यकता नहीं है | सम्बरासुर और उसकी असुर सेना तुम्हारी हत्या करने का प्रयास नहीं करेगी | उनका पहला प्रयास होगा तुम्हारा मतान्तरण करना | तुम्हे मतांतरित करने की सम्भावना में वे तुम्हारे राज्य पर कब्ज़ा करने का अवसर देखेंगे |' इंद्र देव बोले |

दशरथ उन मनुष्यों में से एक थे जो शक्ति में इंद्र देव के समान थे | वे अपने नाम दशरथ को चरितार्थ करते थे | चूँकि जो भी पदार्थ हमारे आस पास अस्तित्व में हैं उसका वितरण इंद्र देव करते हैं , जिन तरीको से हम पदार्थ का अनुभव करते हैं उन्हें 'इन्द्रिय' कहा जाता है | कुल 10 इन्द्रिय हैं जिनकी कल्पना आप ऐसे 10 घोड़ों से कर सकते हैं जो आपके मन के रथ को खींचते हैं | आत्मा की कल्पना सारथि के रूप में की जा सकती है |

श्रवण , स्पर्श , दृष्टि , स्वाद और गंध – ये पांच इन्द्रिय तो ऐसी हैं जिनके लिए विवरण की आवश्यकता नहीं है , आप नाम से ही समझ गए होगे | आप पदार्थ को सुन सकते हैं , स्पर्श कर सकते हैं , देख सकते हैं , चख सकते हैं , और सूंघ सकते हैं | जो बाकी पांच इन्द्रियां हैं , उनका विवरण मैं करता हूँ |

संचार : आप पदार्थ के साथ संचार कर सकते हैं | आप अपने मित्र का नाम पुकारते हैं तो वह आपकी ओर देखता है | अतः आप अपने मित्र से संचार करते हैं | अन्य उदाहरण हमारी स्वयं की देह है | हमारी देह का एक अंग दुसरे अंग से संचार करता है | आप एक पदार्थ को दुसरे पदार्थ के साथ संचार करते रोज देखते हैं |

पुनर्स्थापन : आप पदार्थ का स्थान बदल सकते हैं | उदाहरणतः आप चलकर अपनी देह को एक स्थान से दुसरे स्थान ले जाते है | आप किसी पदार्थ को एक स्थान से दुसरे स्थान ले जा सकते हैं |

रचना : आप एक पदार्थ से दूसरा पदार्थ बना सकते हैं | जैसे दूध से दही , बीज से पौधा, बर्फ से पानी आदि | आप मानव देह भी बनाते हैं प्रजनन की प्रक्रिया द्वारा |

योग : आप पदार्थ की एक इकाई को दूसरी इकाई से जोड़ सकते हैं | उदाहरण के तौर पर आप भोजन को अपनी देह में जोड़ते हैं (भोजन करके), किसी व्यक्ति को अपने जीवन में जोड़ते हैं (रिश्ते), किसी वस्तु को अपने घर में जोड़ते हैं (घर में कोई नई चीज लाकर) आदि आदि | हाथ में किसी चीज को पकड़ना भी योग की इन्द्रिय में गिना जाता है |

निष्कासन : आप पदार्थ की एक इकाई को दूसरी इकाई से निष्काषित करते हैं | जैसे देह से पसीना , जीवन से व्यक्ति , घर से किसी चीज को बाहर करना |

आप पदार्थ को इन 10 तरीको से अनुभव करते हैं जिनका विवरण मैंने अभी किया है | ये मन के उस रथ के 10 घोड़े हैं जिसका चालन आपकी आत्मा करती है और इस नश्वर संसार को अनुभव करती है | हर आत्मा के पास यह रथ है | लेकिन जब असुर आपके रथ का चालन करने लगे और आपकी आत्मा को पिछली सीट पर धकेल दें तो विनाश निश्चित है | तिमिध्व्ज के रथ (मन) का चालन सम्बरासुर कर रहा था |

युवा राजा दशरथ ने अपना सिर मुंडवा लिया और चल दिए वैजयंत , तिमिध्वज के क्षेत्र में , निडर होकर | जो भी उसके क्षेत्र में घुसा था वह या तो मृत्यु को प्राप्त हो गया था या मतांतरित हो गया था | दशरथ को मृत्यु से डर नहीं था | और उन्हें अपने मन और देह पर अपने नियंत्रण का पूरा भरोसा था |

इंद्र को भय था कि दशरथ की देह और मन पर असुरों का कब्ज़ा न हो जाए | क्योंकि अगर वे भी असुरों की बलि चढ़ जाते तो तिमिध्व्ज का सामना करने वाला कोई नहीं था | इंद्र देव के डर बेबुनियाद नहीं थे | दशरथ पर असुरों का कब्जा लगभग हो गया था | देवी कैकेयी ने उनको अंतिम क्षण में बचाया |

असुर उन पर कब्ज़ा करने में सफल कैसे हो गए , यह समझाने के लिए मैं आपसे एक सवाल पूछता हूँ |

मान लो कि आप किसी रथ का चालन कर रहे हैं | आप अपने मार्ग पर जा रहे हैं | एक अजनबी आपको उसके मार्ग पर ले जाना चाहता है | वह आपके पास आता है और कहता है , 'मुझे रथ चलाने दो |' क्या सहमत हो जायेंगे आप?

नहीं | आपके पास अपने रथ की कमान किसी अजनबी के हाथों में देने का कोई कारण नहीं है |

अब दूसरा दृश्य लेते हैं | मान लो आप किसी अनजानी जगह से जा रहे हैं और आप रथ का पहिया किसी गड्ढे में फंस जाता है |आपके घोड़े दर्द से कराहने लगते हैं | इससे पहले कि आप रथ को बाहर निकालने का अपना प्रयास करें , एक अजनबी आकर कहता है , 'कितने बेकार चालक हो तुम | तुम्हारे घोड़े तुम्हारी बेकार चालन क्षमता के कारण दर्द में हैं |'

आप उस व्यक्ति को अनसुना करते हैं और रथ को आगे की ओर धकेलना शुरू करते हैं | वह व्यक्ति आप पर ताने कसता रहता है | जब आप थक जाते हैं , वह कहता है , 'पीछे हटो धरती के बोझ ! मुझे प्रयास करने दो |'

रथ को आगे की ओर धकेलने की बजाय वह रथ को पीछे की और धकेलता है और पहिया तुरंत बाहर आ जाता है | उसे गड्ढे के आकार का ज्ञान था क्योंकि यह गड्ढा उसी ने ही कुछ देर पहले खोदा था आपको फंसाने के लिए | वह आपके रथ को चलाने का प्रस्ताव रखता है | क्योंकि आपमें 'रथ गलत तरीके से चलाने' का अपराध बोध भर गया है , आप उसे ख़ुशी से अपने रथ की कमान दे देते हैं और आप पीछे की सीट पर बैठ जाते हैं |

असुर भी इसी तरह अच्छे से अच्छे देह-मन पर कब्ज़ा करते हैं | और दशरथ तो स्वयं जाल में फंसने चले थे , जाल फ़ैलाने वालो को हराने के मकसद से |

जब वे तथाकथित वैजयंत राज्य के एक गाँव में पहुंचे तो उन्हें दिखे टूटे हुए घर, भूखे मरते लोग , मरे जानवरों के अस्थिपिंजर , शुष्क भूमि , और कष्ट के ऐसे दृश्य जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखे थे | उन्हें एक भोजन प्राप्त करने की पंक्ति दिखाई दी जहाँ तिमिध्वाज के लड़ाके भोजन वितरित कर रहे थे | चूँकि उनकी देह स्वस्थ और शाही दिख रही थी , दुबले -पतले ग्रामवासिओं का ध्यान उनकी ओर गया |

जब उनसे उनका परिचय पुछा गया तो उन्होंने सत्य कहा – 'मैं दशरथ हूँ | कोसल का राजा | सत्य की खोज में हूँ |'

'लानत है | लानत है | लानत है |' ग्रामवासी चिल्लाये | कुछ लोगों ने उन पर थूक भी दिया क्योंकि उनका मानना था कि राजा लोग ही उनके कष्टों का कारण थे |

दशरथ राजा को खाना तो नहीं मिला, तिमिध्व्ज के लड़ाकों ने उनको गिरफ्तार कर लिया और गाँव के चौक में ले आये |

लगभग सभी गाँवों में एक दैत्याकार पत्थर का पहिया होता था जिसे हाथी की सहायता से एक वृताकार लकीर में घुमाया जाता था | गाँव वाले उसका उपयोग मकान आदि बनाने के लिए उपयोग होने वाले पदार्थों को पीसने के लिए प्रयोग किया करते थे | यह पहिया उन्नति का प्रतीक हुआ करता था | तिमिध्वजा ने इसको शोषण का प्रतीक घोषित कर दिया था | दशरथ को ऐसे ही एक पहिये को तोड़ने का काम दिया गया | उसने पूरी शक्ति से हथोडा चलाया और गाँव वाले 'लानत, लानत' की रट लगाते रहे| शाम को जब वे बेहोश होने को हुए तो उन्हें थोडा सा भोजन और पानी दिया गया |

12 दिन तक उनके एक स्थान से दुसरे स्थान पर ले जाया गया | उनके कान ग्रामीण लोगो की कष्ट भरी पुकारों और 'लानत है , लानत है' की रट सुनकर दर्द करने लगे थे | 'काश मैं बहरा होता | काश मेरे पास श्रवण इन्द्रिय न होती|' वे लगातार ऐसी इच्छा करते थे |

कष्ट और दयनीयता के अकल्पनीय दृश्यों ने उनकी आँखों को इतनी यंत्रणा दे रखी थी कि वे सोचते थे , 'काश मैं अँधा होता | काश दृष्टि इन्द्रिय नहीं होती |'

उन्हें स्नान करने की अनुमति नहीं थी | पीने का पानी भी जहाँ बूंद बूंद प्रदान किया जाता हो वहां नहाने की कल्पना भी बेकार थी | एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो दिन में दो बार सुगन्धित जल में स्नान करने का अभ्यस्त हो , यह एक अकल्पनीय पीड़ा थी | उन्हें त्वचा वृक्ष की छाल जैसी महसूस होने लगी थी | 'काश मैं अपनी त्वचा को छील पाता | काश स्पर्श इन्द्रिय ही न होती' वे ऐसी इच्छा करते थे |

जो भी थोडा बहुत बेकार खाना उन्हें दिया जाता था वह नीम की पत्तियों जैसा लगता था | 'काश स्वाद इन्द्रिय ही न होती' वे ऐसी इच्छा करते थे |

एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो सुगन्धित महल में रहने का अभ्यस्त हो , मरे जानवरों की गंध ऐसे लगती थी जैसे चाकू से उनके नथुने छीले जा रहे हो | 'काश गंध इन्द्रिये ही न होती' वे इच्छा करते थे |

वे किसी से संवाद नहीं कर पाते थे | ऐसे व्यक्ति जिनके शब्द उनके राज्य में कानून होते थे उनके लिए वैजयंत मुर्दों की घाटी सा लगता था | 'काश संचार की इन्द्रिय ही न होती|' वे सोचते थे |

उन्हें मांस के लोथड़े की तरह एक स्थान से दुसरे स्थान पर ले जाया जाता था | और वे बिना अनुमति के एक पत्ते को भी नहीं हिला सकते थे | 'काश पुनस्थापन की इन्द्रिय ही नहीं होती,' वे सोचते थे |

जिन हाथो में कभी तलवार शोभती थी वे हाथ अब अस्थिपिंजर उठा रहे थे | 'काश योग इन्द्रिय ही नहीं होती |' वे सोचते थे |

अयोध्या वापिस जाने की आशा मर चुकी थी | ऐसा लगता था कि उनका परिवार, उनका महल , उनका राज्य सब उनके जीवन से निष्काषित हो गए थे | 'काश निष्काशन इन्द्रिय ही न होती,' वे दुआ करते थे |

उनका नियंत्रण सभी 10 इन्द्रियों से खो चूका था | वे रथ के उन घोड़ों के समान थी जो रथ के गड्ढे में फंस जाने के कारण असहाय थे और दर्द से बिलख रहे थे |

उनके वैजयंत आने का बारहवा दिन था | शाम हो गई थी | उन्हें धरती खोदने का काम तिमिध्व्ज के लड़ाकों ने दे रखा था | 'लानत है , लानत है' का स्वर उनके कान बहरे कर रहा था | तभी अचानक उन्होंने स्वयं भी उस सुर में अपना सुर मिला दिया और चिल्लाने लगे 'लानत है , लानत है '!

स्वर्ग सा अहसास हुआ | ऐसा लगा जैसे किसी डूबते हुए मनुष्य ने ताजा हवा की सांस ली हो | वैजयंत राज्य के कष्टों के लिए अन्य राज्यों के राजाओं तथा प्रजाओं को कोसना अच्छा लगा | तिमिध्व्ज की विचारधारा को धारण करना अच्छा लगा | जो दृश्य उनकी आँखों में सुइयां सी चुबो रहे थे , अचानक सहनीय लगने लगे | आस पास की चीजे उनकी आत्मा को परेशान नहीं कर रही थी क्योंकि उनकी आत्मा वहां थी ही नहीं | उनकी आत्मा की जगह एक ऐसे असुर ने ले ली थी जो उस कष्टप्रद परिवेश का अभ्यस्त था |

तिमिध्व्ज के लड़ाकों ने दशरथ को ख़ुशी से सम्मिलित कर लिया | अब उन्हें आदर भी मिला और अधिकार भी | ऐसा लगा जैसे दशकों के सूखे के बाद वर्षा हुई हो | तिमिध्वजा के लड़ाकों के साथ कुछ दिन रहने के पश्चात् उनके दंडक जंगल में तिमिध्वज से मिलवाने ले जाया गया |

तिमिध्व्ज की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था | अब वह कोसल जैसे समृद्ध राज्य का अप्रत्यक्ष रूप से शासन कर सकता था | उसने दशरथ का उत्साह के साथ अपने महल में स्वागत किया | घने जंगल में उसका एक भव्य महल था जिसको उसने शत्रुओं से लुटे हुए खजाने से सजाया था |

'स्वागतम दशरथ ! इस महल के चप्पे चप्पे को निहारो क्योंकि यह महल अच्छाई की बुराई पर और शोषित की शोषक पर विजय का प्रतीक है |' तिमिध्वज दशरथ का स्वागत अपने निजी कक्ष में करते हुए बोला |

दशरथ , या यह कहे कि वह असुर जिसने उनके मन पर कब्ज़ा कर रखा था , इन शब्दों को सुनकर अति प्रफ्फुलित हुआ |

हां , मातांगो | बुराई प्राय: अच्छाई के वेश में काम करती है जैसा कि मैंने अपने व्याख्यान के शुरू में बताया|

एक 10 साल की लड़की ने कक्ष में प्रवेश किया | उसके हाथ में खाने पीने की चीजो की एक टोकरी थी | वह तिमिध्व्ज की विद्रोह सेना की वर्दी पहने हुए थी | उसकी कमर पर लटका चाकू अजीब प्रतीत हुआ | दशरथ की नजर उसके चेहरे पर लगे चोट के निशानों पर जाकर ठहर गई |

'इस लड़की का नाम है झस|' तिमिध्व्ज दुष्टतापूर्ण मुस्कान के साथ बोला , 'इसकी माता शत्रुओं द्वारा मौत के घाट उतार दी गई | झस तब तक चैन से नहीं सोएगी जब तक की अपनी माँ की हत्या का बदला न ले ले |'

दशरथ की नजर झस के चेहरे पर टिकी हुई थी | उन्हें उसमे अपनी पत्नी कैकेयी का चेहरा नजर आया | वास्तविकताबोध हुआ उन्हें कुछ ऐसे जैसे तीरों की वर्षा हुई हो | उन्हें बोध हुआ कि उनको असुरों ने कब्जे में ले लिया था | एक छोटी सी बच्ची को युद्ध में झोकने के दुष्कृत्य को वह कैसे उचित ठहरा सकते थे ? कैकेयी का पालन पोषण भी तो बिना माँ के हुआ था | कैकेयी के पिता ने उसकी माता को निष्काषित कर दिया था | माँ के न होते हुए भी वह एक दयालु , सुशिल और सुन्दर महिला बड़ी होकर बनी | उसे झस की तरह कठिनाइयों में नहीं झोका गया था |

उन्होंने झस के कक्ष से बाहर जाते ही अपनी तलवार से तिमिध्व्ज की हत्या कर दी | सम्बरासुर जो तिमिध्ज की देह में रह रहा था, बेघर और अशक्त हो गया | उसकी असुरों की सेना जो हजारों लोगो को भ्रम में रखे हुई थी वह भी बिखर गई | सम्ब्रासुर के आतंक का अंत हुआ और दशरथ अपने नगर अयोध्या लौट आये |

वे सीधे कैकेयी के महल में गए और अपना आभार प्रकट किया | उन्होंने कैकेयी को पूरी कहानी सुनाई और बताया कि कैसे उसने न केवल उनकी जान बचाई अपितु राज्य की भी रक्षा की | उन्होंने उसको दो वरदान मांगने को कहा- एक उनके जीवन की रक्षा के लिए और दूसरा राज्य की रक्षा के लिए | कैकेयी भाव विह्वल हो गई | आज तक जो भी उसने इच्छा की थी सब उसे मिला था | उसे नहीं पता था कि वो क्या मांगे | इसलिए दशरथ ने उसे कहा कि उसकी जब भी कोई इच्छा हो वह दो वरदान मांग ले |

इस घटना ने कैकेयी का मंथरा के प्रति दृष्टिकोण बदल दिया , वह मंथरा जिसने कैकेयी को माँ न होने का अहसास नहीं होने दिया था और उसका पालन पोषण किया था | कैकेयी अपराधबोध से ग्रस्त हो गई | वे इस बात से शर्मसार थी कि उन्होंने कभी मंथरा की सेवाओं के लिए उसे धन्यवाद तक नहीं दिया था | "योग" की इन्द्रिय जो रिश्तों से सम्बन्ध रखती है ने उस तरह मंथरा के साथ रिश्ते को नहीं निभाया था जिस तरह से कैकेयी की आत्मा को सुख मिलता | उस इन्द्रिय का घोडा दर्द से बिलबिलाया | 'लानत है , लानत है' का स्वर उनके मन में गूंजा |

अगली दोपहर प्रेम और आभार अनायास फूट पड़ा और उन्होंने घंटो मंथरा के साथ गप्पे मारते हुए बिताये | राजा दशरथ की अन्य पत्नियों के बारे में चुगली करना कैकेयी का स्वभाव नहीं था | उनकी आत्मा ऐसी चुगली की आज्ञा कभी नहीं देती | लेकिन उनकी आत्मा चालक की सीट पर थी ही नहीं | एक ऐसे असुर ने उनकी आत्मा का स्थान ले लिया था जो चुगली आदि में अभ्यस्त था |

दशरथ असुरों के साम्राज्य को नष्ट करके आये थे लेकिन असुरों का संक्रमण अपने घर तक ले आये थे | सालो बाद इसी संक्रमण ने मानवता की दिशा बदल दी |

देखा , अशंक , अपने मन में अपराधबोध और पश्चाताप रखने से क्या होता है? असुरों ने दशरथ को अपराधबोध में धकेलकर उनके मन पर कब्ज़ा कर लिया था | कैकेयी के अपराधबोध ने एक ऐसे असुर को मेहमान बना लिया जो मंथरा के प्रति अत्यधिक स्नेह रखता था जिसके कारण भगवान् राम को बाद में वनवास मिला | अतः अपने अपराधबोध को मेरे चरणों में रख दो | मुझे पहले ही पता है कि तुमने क्या किया है इसलिए इसको मुझे समर्पित कर दो और इससे पहले कि असुर इस पर कब्ज़ा कर ले अपने मन को साफ़ कर लो |

हनुमान जी ने अपना व्याख्यान पूरा किया और बाबा मातंग ने यजमान अशंक के लिए आगे की रस्मे शुरू की |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़े हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home **मातंग इतिहास** Terms of Use Privacy Policy Reach Us **तकनीकी सहायता** Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print